इकाई 10 आंग्ल-मराठा और मैसूर युद्ध

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य
10.1 प्रस्तावना
10.2 भारतीय राज्यों और ब्रिटिश शक्ति के बीच सर्वोच्चता के लिए संघर्ष
10.3 मैसूर युद्ध
10.4 मराठा युद्ध
10.5 भारतीय राज्यों की असफलता के कारण
10.6 सारांश
10.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

10.0 उद्देश्य

इस इकाई में मैसूर और मराठा राज्य में ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार पर प्रकाश डाला जा रहा है। इसे पढ़ने के बाद आप :

- मैसूर और मराठा राज्य पर आधिपत्य के लिए होने वाले संघर्ष के स्वरूप को रेखांकित कर सकेंगे;
- मैसूर और मराठा राज्य के ब्रिटिश साम्राज्य के अंग में परिवर्तित होने की प्रक्रिया का वर्णन कर सकेंगे; और
- ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ भारतीय राज्यों की विफलता के आधारभूत तत्वों पर प्रकाश डाल सकेंगे।

10.1 प्रस्तावना

खंड 1 में आपने 18वीं शताब्दी के दौरान मुगल साम्राज्य के पतन के बाद मराठा और मैसूर राज्य के उदय का अध्ययन किया। इसी काल के दौरान भारतीय उप-महाद्वीप में यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों का भी प्रवेश हुआ। इसके परिणामस्वरूप अठारहवीं शताब्दी के अंत और उन्नीसवीं शती की शुरुआत में यूरोपीय शक्तियों और भारतीय राज्यों के बीच राजनीतिक सर्वोच्चता हासिल करने के लिए संघर्ष हुआ। इस इकाई में हम मैसूर और मराठा राज्य के साथ ब्रिटिश शक्ति के संघर्ष का आलोचनात्मक मूल्यांकन करेंगे।

10.2 भारतीय राज्यों और ब्रिटिश शक्ति के बीच सर्वोच्चता के लिए संघर्ष

अठारहवीं शताब्दी के दौरान भारत में विभिन्न शक्तियों के बीच संघर्ष हुआ। यह संघर्ष केवल यूरोपीय औपनिवेशिक शक्ति और भारतीय राज्यों के बीच नहीं हुआ, बल्कि विभिन्न भारतीय राज्यों के बीच भी राजनीतिक सर्वोच्चता के लिए आपसी संघर्ष हुआ। यहाँ हम उन मुद्दों पर प्रकाश डालेंगे, जिनके कारण विभिन्न शक्तियों के बीच संघर्ष हुआ।

क्षेत्रीय विस्तार की आकांक्षा के कारण भारतीय शक्तियों के बीच अक्सर युद्ध होते थे। इस विस्तारवादी नीति के लिए व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा अधिक से अधिक क्षेत्र पर अधिकार जमाने की लालसा या धार्मिक उन्माद आदि का कारण माना जाता रहा है। पर ऐसा मानना समूचे ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का अतिसाधारणीकरण होगा। क्षेत्रीय विस्तार और ज्यादा आय के स्रोत प्राप्त करने का एक तरीका था। जब किसी राज्य को अपने कोष में वृद्धि करनी होती थी या राजस्व बढ़ाना होता था तो नये स्रोतों की खोज में वह नये क्षेत्रों पर अधिकार जमाता था। मसलन, मराठों की आय अधिकांशतः चौथ और सरदेशमुखी पर निर्भर थी। अतः स्रोतों को बढ़ाने के लिए क्षेत्रीय विस्तार किया जाता था और पड़ोसी राज्य एक-दूसरे से युद्ध किया करते थे।

इसके अतिरिक्त मैसूर के संदर्भ में एक खास स्थिति उत्पन्न हो गई। मैसूर के उदय से मराठों, कर्नाटक के नवाब और हैदराबाद के निजाम को खतरा उत्पन्न हो गया। मैसूर का उदय पड़ोसी राज्य की आँखों का काँटा बन गया। ये सभी राज्य अपनी स्थिति सुदृढ़ करने और अपनी सीमा के विस्तार की प्रक्रिया में थे। मैसूर के उदय से उनकी इस प्रक्रिया में निश्चित रूप से बाधा पड़ी। मराठा और निजाम ने मैसूर के खिलाफ एक मोर्चा बनाया और उसे दबाने के लिए अंग्रेजों की भी सहायता ली। पर निजाम दक्षिण में मराठों के विस्तार से भी चिंतित था, अतः उसने मराठों के खिलाफ

अंग्रेजों की सहायता की। सभी एक-दूसरे के ऊपर वर्चस्व स्थापित करने की कोशिश में लगे थे। अतः इस समय का राजनीतिक दृश्य विभिन्न राज्यों के आपसी कलह से भरा पड़ा था और विस्तारवादी नीति का बोलबाला था। देशी शक्तियों की आपसी प्रतिस्पर्द्धा, मनमुटाव और संघर्ष के कारण अंग्रेजों ने देश के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप किया और उन्हें खुलकर खेलने का मौका मिला।

मैसूर राज्य मराठा राज्य में अंग्रेजों के हस्तक्षेप का आरंभिक कारण वाणिज्य से संबद्ध था। मालाबार तट पर हैदर और टीपू का अधिकार था, जहाँ से काली मिर्च और इलाइची का व्यापार होता था। अंग्रेजों को अपने व्यापार के लिए यह खतरनाक स्थिति लगती थी। मैसूर से मद्रास की उपजाऊ भूमि और व्यापार पर उनकी पकड़ को भी खतरा था। 1784 के बाद पश्चिमी भारतीय तट पर कंपनी का सूती कपड़े का व्यापार तेजी से बढ़ा। गुजरात से बंबई होकर सूती कपड़ा चीन भेजा जाता था। अतः ब्रिटिश सत्ता ने इस प्रदेश में अधिक से अधिक हस्तक्षेप किया। ब्रिटिश शक्ति अपने लाभदायक व्यापार को निर्विघ्न रूप में चलाते रहने के लिए मराठों को अपने रास्ते से हटाना चाहती थी। इसके अलावा, इन दोनों राज्यों (मैसूर और मराठा) के अस्त्रों, बंदूकों और आधुनिक आयुधों के विस्तार से कम्पनी के सैन्य शक्ति को खतरा उत्पन्न हो गया। इन दोनों राज्यों में अंग्रेजों के हस्तक्षेप के और भी कई कारण थे। मैसूर के शासकों ने फ्रांसीसियों के साथ संधि की थी, यह स्थिति अंग्रेजों के लिए खतरनाक थी। ब्रिटेन की सरकार को नेपोलियन युद्ध में बढ़ते खर्चे के कारण अधिक राशि की आवश्यकता थी और ब्रिटिश व्यापारी अपने वाणिज्यिक हितों के कारण प्रत्यक्ष राजनीतिक हस्तक्षेप के पक्ष में थे। इससे इस क्षेत्र में ब्रिटिश विस्तारवादी नीति को बढ़ावा मिला। ब्रिटिश उपनिवेशवादी सैन्य शक्ति के उपयोग का समर्थन करते हुए तर्क देते हैं कि " ……लगभग सभी समकालीन भारतीय शासकों ने अपने पूर्ववर्ती राजवंशों और अधिकारों का हनन किया है, अतः पुरातन और योग्य व्यक्तियों के शासन को पुनः स्थापित किया जा सकता है और उनके धार्मिक और नागरिक अधिकारों को पूर्व प्रतिष्ठा दिलाई जा सकती है।" मसलन, मैसूर के संदर्भ में ब्रिटिश नीति का मूल उद्देश्य हैदर अली को हटाकर हिंदू बोडयार घराने का राज्य स्थापित करना था। इस प्रकार का तर्क केवल राजनीतिक-आर्थिक परिस्थिति की उपज नहीं थी बल्कि पश्चिमी विचारकों और प्रशासकों के एक समुदाय द्वारा उनके राजनीतिक कार्यकलापों को वैध स्थापित करने का एक प्रयास था।

जैसा कि हमने ऊपर देखा, भारतीय राज्यों के बीच वर्चस्वता के लिए संघर्ष हुआ और इस कारण से भारतीय राजनीतिक माहौल में एक प्रकार की अनिश्चितता आ गई। इस अनिश्चितता के माहौल में अंग्रेजों को अपना मुनाफा बढ़ाने और भारतीय राज्यों के अंदरुनी मामलों में हस्तक्षेप करने, और अपनी सीमा बढ़ाने का मौका मिला। अगले भाग में हम इस बात का जिक्र करने जा रहे हैं कि किस प्रकार अंग्रेजों ने विभिन्न देशी शक्तियों को आपस में लड़ाया और उनकी शक्ति क्षीण की। इसके अलावा आंग्ल-मैसूर और आंग्ल-मराठा युद्ध पर भी विचार विमर्श किया जाएगा।

10.3 मैसूर युद्ध

अंग्रेजों के समक्ष मैसूर राज्य के समर्पण के पूर्व हैदरअली और टीपू सुल्तान ने अंग्रेजों के साथ चार बार युद्ध किया। इन सारे युद्धों का एक ही कारण था। अंग्रेज मैसूर शासकों के स्वतंत्र अस्तित्व को समाप्त करना चाहते थे। मराठों, कर्नाटक के नवाब और हैदराबाद के निजाम ने मैसूर शासक की शक्ति को कुचलने के लिए समय-समय पर अंग्रेजों के साथ गठबंधन किया। 1766 में मराठों और निज़ाम के बीच संधि हुई और अंग्रेजों की सहायता से उन्होंने हैदर-अली पर आक्रमण किया। लेकिन हैदरअली ने कुशलतापूर्वक निजाम और मराठों को अपनी तरफ मिला लिया और उन्हें अंग्रेजों के खिलाफ कर दिया। इस प्रकार उसने अंग्रेजों पर आक्रमण किया और वह मद्रास तक पहुंच गया। 1769 ई. में उसने मद्रास काउंसिल को अपनी मर्जी की संधि पर दस्तखत करने को विवश किया। यह एक प्रकार की प्रतिरक्षात्मक संधि थी। इसके तहत दोनों ने किसी तीसरी शक्ति द्वारा आक्रमण करने की स्थिति में एक-दूसरे की सहायता करने का संकल्प किया।

लेकिन अंग्रेज इस संधि के प्रति निष्ठावान नहीं थे। जब 1771 में मराठों ने हैदरअली के राज्य पर आक्रमण किया, तो अंग्रेज सहायता के लिए आगे नहीं आये। इसके बाद फिर अंग्रेजों और मैसूर के बीच युद्ध का माहौल तैयार होने लगा, केवल समय और संदर्भ की तलाश थी। अंग्रेजों ने फ्रांसीसी बस्ती माहे पर कब्जा कर लिया, जो हैदर अली के राज्य क्षेत्र में पड़ता था। यह दूसरे मैसूर युद्ध का तात्कालिक कारण बना। मराठा और निजाम को अपनी ओर मिलाकर अंग्रेजों ने हैदरअली की स्थिति कमजोर कर दी और 1781 ई. में पोर्ट नोबो में हैदरअली को पराजित कर दिया। मैसूर की सेना अंग्रेजों पर यदाकदा आक्रमण करती रही पर द्वितीय आंग्ल-मैसूर के दौरान ही 1782 में बीमारी से हैदर अली की मृत्यु हो गई।

हैदरअली के पुत्र और उत्तराधिकारी टीपू ने अंग्रेजों के खिलाफ जंग जारी रखी। पर, स्रोतों की कमी, मराठों के रवैये की अनिश्चितता, कोरोमंडल तट पर फ्रांसीसी बेड़े की उपस्थिति और अन्य कई कारणों से मद्रास सरकार का दृष्टिकोण बदल गया और उन्होंने संधि की इच्छा जाहिर की। टीपू भी अंग्रेजों से युद्ध जारी नहीं रखना चाहता था, क्योंकि अपने सिंहासन-रोहण के बाद वह अपने प्रशासन को मजबूत करना चाहता था। अतः 1784 में मंगलोर की संधि के तहत अंग्रेजों के साथ युद्ध की समाप्ति हुई।

मानचित्र 1 भारत (1757-1857)

पर दक्कन में वर्चस्व स्थापित करने की प्रतिस्पर्द्धा का यह कोई अंतिम हल नहीं था। यह अंतिम प्रहार के पहले की शांति थी। युद्ध का होना अपरिहार्य था। 1786 में लार्ड कार्नवालिस भारत का गवर्नर जनरल बनकर भारत आया और उसने अपनी कूटनीतिक क्षमता के बल पर मराठों और निजाम को अपने पक्ष में कर लिया। टीपू ने अंग्रेजों के मित्र त्रावणकोर पर हमला किया, अब अंग्रेजों के साथ युद्ध अपरिहार्य हो गया। युद्ध 1790 में शुरू हुआ और यह दो वर्षों तक चला। तृतीय मैसूर युद्ध में टीपू को हार का सामना करना पड़ा और उसने संधि का प्रयत्न किया। 1792 में श्रीरंगपट्टनम की संधि पर हस्ताक्षर किया गया और इसके तहत टीपू को अपने राज्य का आधा हिस्सा अंग्रेजों और उसके सहयोगियों को दे देना पड़ा। टीपू अंग्रेजों के सामने समर्पण करने के लिए तैयार नहीं था, पर तृतीय मैसूर युद्ध ने उसकी कमर तोड़ दी और दक्कन पर उसकी पकड़ कमजोर हो गयी।

4 श्री रंगपट्टनम को बचाने का टीपू का अंतिम प्रयास

1798 में लार्ड वेलेस्ली भारत का गवर्नर जनरल बनकर आया। उसने ब्रिटिश विस्तारवादी नीति को एक बार फिर हवा दी। वेलेस्ली ने अपनी "सहायक संधि" में मैसूर राज्य को भी शामिल करना चाहा। पर टीपू ब्रिटिश साम्राज्यवाद के समक्ष अपनी स्वतंत्रता को समर्पण करने का कतई इच्छुक नहीं था। गवर्नर जनरल ने 1799 में मैसूर शासक के खिलाफ एक सेना भेजी जिसके साथ टीपू का संक्षिप्त पर भयंकर युद्ध हुआ। टीपू की हार हुई। इसी वर्ष टीपू युद्ध करता हुआ मारा गया।

श्रीरंगपट्टनम को लूट लिया गया और टीपू का राज्य अंग्रेजों और निजाम ने आधा-आधा बाँट लिया। टीपू वंश का राज्य समाप्त हुआ और मैसूर का राज्य वोड्यार राजवंश को दे दिया गया, जिससे हैदरअली ने राज्य छीना था। अब मैसूर ब्रिटिश साम्राज्य का गुलाम हो गया।

बोध प्रश्न 1

1) भारतीय राज्य और अंग्रेजों के बीच हुए संघर्ष के कारणों का 100 शब्दों में उल्लेख करें।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) निम्नलिखित वाक्यों को पढ़ें और सही कथन पर सही (√) का निशान लगाएँ।

i) विभिन्न राज्यों के बीच निम्नलिखित कारणों से दुश्मनी थी —

(क) शासकों का धर्म अलग था

(ख) शासक एक जाति के नहीं थे

(ग) शासकों ने राज्य विस्तार की नीति को बढ़ावा दिया।

ii) भारत में सहायक संधि को किसने लागू किया ?

(क) लार्ड कार्नवालिस

(ख) लार्ड वेलेस्ली

(ग) लार्ड हेस्टिंग्स

iii) 1799 में टीपू सुल्तान की मृत्यु के बाद अंग्रेजों ने --

(क) टीपू के उत्तराधिकारियों को गद्दी सौंप दी

(ख) ब्रिटिश साम्राज्य में मैसूर को मिला लिया।

(ग) टीपू के राज्य का एक छोटा हिस्सा मैसूर राज्य के रूप में वाड्यर वंश को सौंपा दिया गया।

5 श्री रंगपट्टनम पर कब्ज़ा करते हुए अंग्रेज़

10.4 मराठा युद्ध

नारायण राव की मृत्यु के बाद मराठा सरदारों के बीच पेशवा की गद्दी को लेकर मतभेद उत्पन्न हो गया। इस मतभेद के कारण अंग्रेजों को उनके अंदरूनी मामलें में हस्तक्षेप करने का मौका मिल गया। रघुनाथ राव उर्फ राघोबा पेशवा की गद्दी प्राप्त करना चाहता था। नाना फड़नवीस के नेतृत्व में पूना के मराठा सरदारों ने इसका विरोध किया। गद्दी
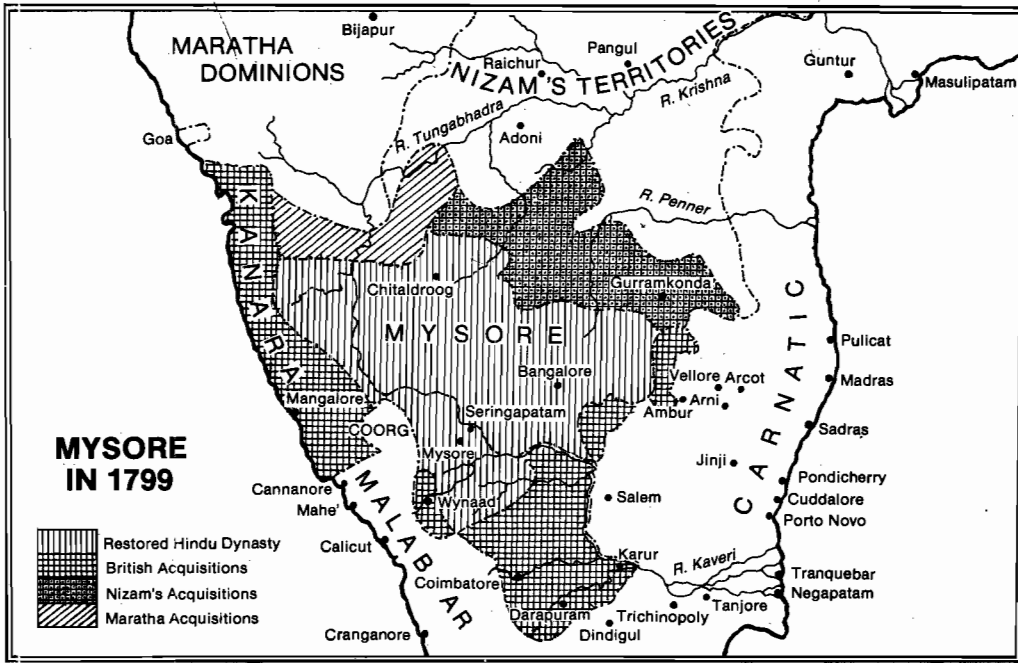
मानचित्र 2 मैसूर (1799 में)

प्राप्त करने में असफल होकर रघुनाथ राव ने अंग्रेजों से सहायता माँगी। प्रथम मराठा युद्ध (1775-82) की यह तात्कालिक पृष्ठभूमि थी। महादाजी सिंधिया, जिसकी नजर मराठा राज्य संघ के सर्वोच्च पद पर थी, अभी अंग्रेजों से उलझना नहीं चाहता था, अंग्रेज भी इस स्थिति में संघर्ष से दूर रहना चाहते थे। परिणामस्वरूप सलभई की संधि पर 1782 में हस्ताक्षर हुए और एक वर्ष बाद नाना फड़नवीस ने इसे पुनः स्वीकृति दे दी। सैलसेट पर अँग्रेजों के अधिकार को मान्यता दे दी गयी और माधव राव नारायण को पेशवा घोषित किया गया।

यह व्यवस्था बीस वर्षों तक कायम रही। अंग्रेजों ने इस समय का उपयोग दूसरे मोर्चों (खासकर मैसूर) को संभालने में किया। इन वर्षों में मराठा राज्य की स्थिति काफी खराब रही। मराठा सरदार अपने स्वतंत्र गण राज्यो जैसे बड़ौदा के गायकवाड़, नागपुर के भोंसले, इंदौर के होल्कर और ग्वालियर के सिंधिया की स्वतंत्रता को समाप्त करने में लगे रहे। पेशवा के उत्तराधिकार संबंधी प्रश्न को लेकर भी काफी असंतोष व्याप्त था और मराठा राज्य का केन्द्रीय नियंत्रण नाना फड़नवीस के हाथ में था। इसी समय मराठों पर ब्रिटिश साम्राज्य का पूर्ण नियंत्रण स्थापित करने के उद्देश्य से लार्ड वेलेस्ली ने उन्हें "सहायक संधि" करने के लिए आमंत्रित किया। मराठों ने अंग्रेजों के इस "मित्रता पूर्ण" अनुरोध को ठुकरा दिया, जो वस्तुतः उनकी परतंत्रता का दस्तावेज था।

इसी समय नाना फड़नवीस की मृत्यु हो जाने से अंग्रेजों को अतिरिक्त फायदा मिल गया। एक शक्तिशाली मराठा सरदार जसवंत राव होलकर ने 1800 ई. में पूना में सिंधिया और पेशवा की संयुक्त सेना को पराजित कर दिया और शहर पर कब्जा कर लिया। पेशवा ने वेलेस्ली से सहायता माँगी। इस प्रकार वेलेस्ली को मराठा राज्य के मामले में दखल देने का सुनहरा अवसर मिल गया। इस प्रकार द्वितीय मराठा युद्ध (1803-05) की शुरुआत हुई। पेशवा बाजीराव II ने सहायक संधि स्वीकार कर ली और 1802 में बेसिन के संधि पत्र पर हस्ताक्षर किया। पेशवा अब स्वतंत्र रूप से और बिना ब्रिटिश शक्ति की मंजूरी के किसी भी अन्य राज्य से संबंध स्थापित नहीं कर सकता था और उसे अब हर साल मुआवजे के रूप में बड़ी रकम अंग्रेजों को देनी थी। सिंधिया और भोसले ने मराठा स्वतंत्रता की रक्षा करने की एक कोशिश की। पर वे सुनियोजित ब्रिटिश सेना के सामने टिक न सके। ब्रिटिश सेना ने सिंधिया और भोसले की सेना को पराजित किया और दोनों ने अंग्रेजों से अलग-अलग संधि की। जिस समय अंग्रेजों ने सिंधिया और भोंसले को पराजित किया था, उस समय यशवंत राव होल्कर मूक दर्शक बना बैठा था। 1804 ई. में उसने ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ भारतीय राजाओं को एकजुट करने की कोशिश की। पर वह अपने उद्देश्य में कामयाब नहीं हो सका। इसी समय लार्ड वेलेस्ली का इंग्लैंड से बुलावा आ गया और इस क्षेत्र में अस्थाई शांति कायम हुई।

इसके बावजूद मराठा गणराज्य के अंदरूनी मामले में कोई सुधार नहीं हुआ। मराठों की शक्ति और स्रोत का क्षय हो चुका था। सभी मराठा सरदारों के राज्य में अव्यस्था और कमजोरी का साम्राज्य था। हालांकि, तृतीय मराठा युद्ध (1817-19) के दौरान पेशवा बाजीराव द्वितीय ने मराठा सरदारों को अंग्रेजों के खिलाफ एकजुट करने की कोशिश की। पर ब्रिटिश सत्ता पेशवा का एक बार फिर मराठा गणराज्य पर नियंत्रण स्थापि नहीं होने देना चाहती थी। परिणामस्वरूप युद्ध हुआ और पेशवा की शक्ति और सम्मान को गहरा धक्का लगा।

मराठा गणराज्य भंग कर दिया गया और पेशवा का पद समाप्त कर दिया गया। अंग्रेजों ने पेशवा बाजीराव के सभी अधिकार छीन लिए और वह अंग्रेजों का गुलाम बन गया। नर्मदा के उत्तर स्थित भोसले के राज्य क्षेत्र को ब्रिटिश राज्य

में मिला लिया गया और शेष क्षेत्र पर उसे अंग्रेजों के नियंत्रण में राज्य करने की छूट दी गयी। इसी प्रकार होल्कर ने भी ब्रिटिश सत्ता को अपने राज्य का कुछ हिस्सा सौंप दिया और अंग्रेजों का मातहता हो गया। शिवाजी के एक वंशज प्रताप सिंह को सतारा का राजा बनाया गया। सतारा राज्य पहले पेशवा राज्य क्षेत्र का एक हिस्सा था।

10.5 भारतीथ राज्यों की असफलता के कारण

मैसूर और मराठा राज्य के के स्वरूप, संगठन और काम करने के ढंग में अंतर था (देखें इकाई 3.4)। लेकिन दोनों की कमजोरियाँ समान थीं। वस्तुतः यह कमजोरी अठारहवीं शताब्दी की राजनीतिक व्यवस्था की कमजोरी थी। इन कमजोरियों के कारण भारतीय राज्य साम्राज्यवादी आक्रमण के सामने टिक न सके।

18वीं शताब्दी के दौरान भारतीय राज्य एक-दूसरे से लड़ते रहे थे, यह उस शताब्दी के राजनीतिक परिदृश्य की सबसे बड़ी कमजोरी थी। आपसी संघर्ष और युद्ध ने देशी राजाओं और राज्यों को कमजोर बना दिया और साम्राज्यवादी आक्रमण झेलने की क्षमता उनमें नहीं रही। मैसूर और मराठा राज्य का संघर्ष आपके सामने है। इन दोनों राज्यों के अंग्रेजों ने एक-दूसरे के खिलाफ लड़ाया और इन दोनों राज्यों पर ब्रिटिश राज्य का नियंत्रण स्थापित हो गया।

दूसरा महत्वपूर्ण कारण था, प्रशासन में लयबद्धता का अभाव और विभिन्न गुटबंदी। प्रशासन में व्यक्ति निष्ठा, जाति और अन्य सामाजिक विभाजनों का प्रभाव था। इससे प्रशासन में विभिन्न हितों से जुड़े विभिन्न गुट कायम हुए, जो एक दूसरे का विरोध करते थे। बाहरी आक्रमण के दौरान यह स्थिति घातक सिद्ध हुई। मसलन 1780 के दशक में मराठों की राजनीतिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण बदलाव आया। सिंधियां, भोंसले, गायकवाड़ और होल्कर पेशवा ने नाममात्र का संबंध रखकर अपना स्वतंत्र अस्तित्व कायम करने की होड़ में लगे रहे। इन स्थानीय केन्द्रों के उभरने से केंद्रीय मराठा शक्ति निश्चित रूप से कमजोर हुई। इसके अतिरिक्त उत्तराधिकार के प्रश्न को लेकर विभिन्न गुटों के बीच मतभेद हुए। इन सब कारणों से एक प्रकार का राजनीतिक अस्थायित्व छा गया, जिसका अपने लिए अंग्रेजों ने खूब उपयोग किया।

भारतीय राज्यों के आय के स्रोत भी सीमित थे। मसलन मराठा राज्य मुख्य रूप से चौथ और सरदेशमुखी पर निर्भर था, क्योंकि उसके पास आय का कोई अन्य स्रोत नहीं था। हालाँकि हैदर और टीपू ने अपने राज्य की आय बढ़ाने का समुचित प्रबंध किया था, पर वे भी देहाती इलाकों के संपूर्ण स्रोत का इस्तेमाल नहीं कर सके थे। आय स्रोत की इस कमी का भी प्रभाव भारतीय राज्यों पर पड़ा। उनके खिलाफ ब्रिटिश शक्ति के रूप में एक ऐसा दुश्मन खड़ा था, जिसका बंगाल जैसे उत्पादक क्षेत्र पर अधिकार था और जिसे अपने राष्ट्र का समर्थन प्राप्त था।

कई इतिहासकारों ने शासकों की व्यक्तिगत अयोग्यता और सैन्य संगठन की अकुशलता को भी भारतीय राज्यों के पतन का कारण माना है। ऐसा कहा गया है "मैसूर हिंदू योद्धाओं और तमिल ब्राह्मण प्रशासकों पर ज्यादा निर्भर था" और इस स्थिति में जब टीपू ने मैसूर को इस्लाम राज्य बनाना चाहा तो उसे मुँह की खानी पड़ी। (सी.ए. बेली, द न्यू कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया, वाल.-11.1) इस प्रकार के तर्क स्थिति को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत करने के प्रयास हैं। जैसा कि हमने अवलोकन किया, भारतीय राज्यों की असफलता का कारण शासक और जनता का भिन्न धर्म का होना नहीं था, बल्कि इसके कई अन्य कारण थे। भारतीय सैन्य संगठन को भी एक हद तक ही जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। मैसूर के शासकों ने अपनी सेना को यूरोपीय पद्धति पर संगठित किया था, पर उन्हें भी हारना पड़ा। मराठों ने भी अपनी सेना में यूरोपीय आयुधों को शामिल किया था।

बोध प्रश्न 2

1) निम्नलिखित वक्तव्यों को पढ़ें और सही (✓) तथा गलत (×) का निशान लगाएँ।
   i) सलभई की संधि से सेलसेट पर ब्रिटिश अधिकार पुष्ट हुआ।
   ii) पेशवा ने सहायक संधि व्यवस्था स्वीकार नहीं की।
   iii) विभिन्न मराठा सरदार अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित करने की कोशिश कर रहे थे।
   iv) मुख्यतः अपनी अंदरूनी कमजोरियों की वजह से भारतीय राज्यों का पतन हुआ।

2) भारतीय राज्यों के खिलाफ ब्रिटिश शक्ति की सफलता की व्याख्या आप कैसे करेंगे? 100 शब्दों में उत्तर दें।

....

....

....

....

....

....

....

10.6 सारांश

इस इकाई में हमने मैसूर और मराठा राज्य पर ब्रिटिश सत्ता के आक्रमण और आधिपत्य की प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त की। वस्तुतः अपने वाणिज्यिक हितों के कारण अंग्रेज इन इलाकों की ओर आकृष्ट हुए थे। विभिन्न राज्यों के आपसी संघर्ष और अस्थिर राजनीतिक व्यवस्था के कारण अंग्रेजों को देशी शक्तियों के मामलों में हस्तक्षेप करने का मौका मिला। इन इलाकों पर नियंत्रण स्थापित करने में अंग्रेजों को कई वर्ष लगे और स्थानीय शासकों को दबाने के लिए उन्हें कई युद्ध लड़ने पड़े। भारतीय राज्यों की अंदरूनी कमजोरी के कारण ब्रिटिश शक्ति की विजय हुई। मराठा और मैसूर राज्य के पतन से भारतीय राज्य के प्रमुख स्तंभ ढह गये और भारत में ब्रिटिश राज्य की नींव रखी गयी।

10.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) इस प्रश्न का उत्तर देते समय अंग्रेजों के वाणिज्यिक हितों, क्षेत्रीय विस्तार और राजनीतिक वर्चस्व की आकांक्षा आदि का उल्लेख करें। देखें भाग 10.2।

2) i) ग   ii) ख   iii) ग

बोध प्रश्न 2

1) i) √   ii) ×   iii) √   iv) √

2) इस उत्तर में भारतीय राजाओं के बीच तालमेल के अभाव, भारतीय राज्यों की प्रशासनिक कमजोरियों और स्रोत जुटाने की अक्षमता का उल्लेख करें। देखें भाग 10.5।